22 सूरए अल हज

आयत 1: आयत का अनुवाद:
"ऐ लोगों अपने परवरदिगार से डरते रहो (क्योंकि) क़यामत का ज़लज़ला (कोई मामूली नहीं) एक बड़ी (सख़्त) चीज़ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): क़यामत का ज़लज़ला बहुत बड़ी और सख़्त चीज़ है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक भविष्यवाणी करती है कि क़यामत का दिन अत्यंत भयावह होगा। लेकिन यह तर्क तात्त्विक रूप से बिना कोई प्रमाण या अनुभवजन्य आधार के प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन में किसी भी घटना का कारण-प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाना आवश्यक होता है, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, किसी घटना का निश्चित कारण और उसका परिणाम होना चाहिए। क़यामत का भय उत्पन्न करना बिना प्रमाण या व्यावहारिक आधार के अत्यधिक कल्पना पर आधारित है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में दावा किया गया क़यामत का भयानक रूप न्याय दर्शन के कारण और प्रभाव के सिद्धांत का उल्लंघन करता है। क़यामत के बारे में किसी वास्तविक प्रमाण का अभाव है।**

आयत 2: आयत का अनुवाद:
"जिस दिन तुम उसे देख लोगे तो हर दूध पिलाने वाली (डर के मारे) अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जायेगी और सारी हामला औरते अपने-अपने हमल (दैहशत से) गिरा देगी और (घबराहट में) लोग तुझे मतवाले मालूम होंगे हालाँकि वह मतवाले नहीं हैं बल्कि ख़ुदा का अज़ाब बहुत सख़्त है कि लोग बदहवास हो रहे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): क़यामत के दिन लोग डर के मारे अपने बच्चे और गर्भ को छोड़ देंगे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में दावा करती है, जैसे लोग भय के कारण अपने बच्चों को भूल जाएंगे। लेकिन यह केवल कल्पना और भावनाओं पर आधारित है, जो कोई व्यावहारिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं प्रस्तुत करती।**
- **उदाहरण (Example): यदि हम देखे तो किसी भी क़यामत के दिन से संबंधित घटना में कोई वैज्ञानिक या व्यावहारिक आधार नहीं है। क़यामत को एक प्राकृतिक घटना के रूप में स्थापित करना तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि भविष्य के बारे में कुछ दावा करना बिना प्रमाण के विचारणीय नहीं है।**

आयत 3: आयत का अनुवाद:
"और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बग़ैर जाने ख़ुदा के बारे में (ख़्वाहम ख़्वाह) झगड़ते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): लोग बिना जाने ख़ुदा के बारे में झगड़ते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि कुछ लोग बिना ज्ञान के झगड़ते हैं, लेकिन यह दावा बिना प्रमाण और अनुभव के किया गया है। यह अवलोकन और तर्क के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता, जो न्याय दर्शन में आवश्यक होते हैं।**
- **उदाहरण (Example): यदि हम देखें, तो बहुत सी सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ धार्मिक विचारों के बिना भी विकासशील थीं, और यह तर्क इस आयत के साथ मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत को नज़रअंदाज़ करती है, क्योंकि यह बिना कोई स्पष्ट या अनुभवजन्य आधार के एक बड़ा दावा करती है।**

आयत 4: आयत का अनुवाद:
"जिन (की पेशानी) के ऊपर (ख़ते तक़दीर से) लिखा जा चुका है कि जिसने उससे दोस्ती की हो तो ये यक़ीनन उसे गुमराह करके छोड़ेगा और दोज़क़ के अज़ाब तक पहुँचा देगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुछ लोग अपनी तक़दीर के कारण गुमराह हो जाएंगे और नरक में जाएंगे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत नियति (तक़दीर) के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, जो तर्कसंगत नहीं है। न्याय दर्शन में व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और कर्म पर जोर दिया जाता है, न कि किसी पूर्वनिर्धारित तक़दीर पर।**
- **उदाहरण (Example): गीता (अध्याय 3, श्लोक 16) में कहा गया है कि व्यक्ति अपने कर्मों से अपना मार्ग तय करता है। यह आयत उस सिद्धांत के विपरीत है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन के स्वतंत्र इच्छा और कर्म के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराती।**

आयत 5: आयत का अनुवाद:
"लोगों अगर तुमको (मरने के बाद) दोबारा जी उठने में किसी तरह का शक है तो इसमें शक नहीं कि हमने तुम्हें शुरू-शुरू मिट्टी से उसके बाद नुत्फे से उसके बाद जमे हुए ख़ून से फिर उस लोथड़े से जो पूरा (सूडौल) हो या अधूरा हो पैदा किया ताकि तुम पर (अपनी कुदरत) ज़ाहिर करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर ने मनुष्य को मिट्टी, नुत्फे और ख़ून से उत्पन्न किया, और इसका उद्देश्य पुनर्जीवित करना है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत पुनर्जन्म और पुनर्जीवन की अवधारणा को स्वीकार करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं देती। यह केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**

- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में एक अनुमान को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। केवल अनुभवजन्य प्रमाण या तर्क ही स्वीकार्य होते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत पुनर्जीवित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत करती, जिससे यह न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	**हेटु**	**क़यामत के भय का दावा बिना प्रमाण के है।**
2	**व्याप्ति**	**भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में तर्कहीन दावा।**
3	**प्रमाण**	**बिना ज्ञान के झगड़ा करने का दावा, बिना प्रमाण के।**
4	**हेटु**	**तक़दीर के सिद्धांत का उल्लंघन, व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा को नकारता है।**
5	**अनुमान**	**पुनर्जीवित करने का दावा बिना वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण के।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में तर्क और प्रमाण का अभाव है। वे बिना अनुभवजन्य या वैज्ञानिक आधार के बड़ी घटनाओं और अवधारणाओं को प्रस्तुत करती हैं, जो न्याय दर्शन और तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर और अप्रमाणित हैं।

आयत 6: आयत का अनुवाद:
"कि बेशक ख़ुदा बरहक़ है और (ये भी कि) बेशक वही मुर्दों को जिलाता है और वह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा मुर्दों को जिलाता है और हर चीज़ पर क़ादिर है।**

- **हेतु (Reason): यह आयत ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता और पुनर्जीवन का दावा करती है। हालांकि, न्याय दर्शन के अनुसार, ऐसे दावे को स्वीकार करने के लिए कोई प्रमाण या अनुभवजन्य आधार आवश्यक है, जो इस आयत में अनुपस्थित है। ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता और पुनर्जीवन का दावा केवल विश्वास पर आधारित है, न कि किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण पर।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में किसी घटना का तर्कसंगत आधार और प्रमाण होना आवश्यक है। ख़ुदा द्वारा मुर्दों को जिलाने का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**

आयत 7: आयत का अनुवाद:
"और क़यामत यक़ीनन आने वाली है इसमें कोई शक नहीं और बेशक जो लोग क़ब्रों में हैं उनको ख़ुदा दोबारा ज़िन्दा करेगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): क़यामत आने वाली है और ख़ुदा मृतकों को पुनर्जीवित करेगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत पुनर्जीवित करने का दावा करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं देती। पुनर्जीवन और क़यामत के सिद्धांतों का समर्थन केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर किया जाता है, न कि किसी प्रमाणित तर्क या अनुभवजन्य आधार पर।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में किसी दावा का अनुमान और तर्क आधारित होना चाहिए। पुनर्जीवित होने का दावा तर्कसंगत तरीके से सिद्ध नहीं किया जा सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत पुनर्जीवन और क़यामत के बारे में अनुमान पर आधारित दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।**

आयत 8: आयत का अनुवाद:
"और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो बेजाने बूझे बे हिदायत पाए बग़ैर रौशन किताब के (जो उसे राह बताए) ख़ुदा की आयतों से मुँह मोड़े।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुछ लोग बिना सही ज्ञान के ख़ुदा की आयतों से मुँह मोड़ते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि कुछ लोग ख़ुदा के मार्ग से विचलित होते हैं, लेकिन यह कोई प्रमाण नहीं देती कि वे कितने सही या गलत हैं। न्याय दर्शन में तर्क और प्रमाण का महत्व होता है। यदि कोई व्यक्ति किसी आयत या सिद्धांत से मुँह मोड़ता है, तो इसके पीछे तात्त्विक और प्रमाणिक कारण होना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में प्रमाण की अनिवार्यता है, लेकिन इस आयत में केवल आरोप लगाए गए हैं बिना किसी स्पष्ट प्रमाण या तर्क के।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के बिना आरोप लगाती है कि कुछ लोग ख़ुदा की आयतों से मुँह मोड़ते हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 9: आयत का अनुवाद:
"(ख़्वाहम ख़्वाह) ख़ुदा के बारे में लड़ने मरने पर तैयार है ताकि (लोगों को) ख़ुदा की राह से बहका दे ऐसे (ना बुकार) के लिए दुनिया में (भी) रूसवाई है और क़यामत के दिन (भी) हम उसे जहन्नुम के अज़ाब (का मज़ा) चखाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग ख़ुदा के बारे में लड़ते हैं, उन्हें दुनिया और क़यामत दोनों में सजा मिलेगी।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि जो लोग ख़ुदा के बारे में झगड़ते हैं, उन्हें सजा मिलेगी। हालांकि, न्याय दर्शन के अनुसार, किसी व्यक्ति के कर्मों के लिए सजा का निर्धारण तर्क और प्रमाण पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल आरोपों पर। यह आयत बिना किसी तर्क के आरोप लगाती है।**

- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन में किसी व्यक्ति के कर्मों का मूल्यांकन तर्क, प्रमाण और अनुभवजन्य आधार से होना चाहिए। इस आयत में केवल आरोप लगाए गए हैं, बिना किसी प्रमाण या तर्क के।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना प्रमाण और तर्क के सजा का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयत 10: आयत का अनुवाद:
"और उस वक़्त उससे कहा जाएगा कि ये उन आमाल की सज़ा है जो तेरे हाथों ने पहले से किए हैं और बेशक ख़ुदा बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म नहीं करता।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा किसी पर जुल्म नहीं करता, और यह सजा व्यक्ति के कर्मों का परिणाम है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत व्यक्ति के कर्मों के परिणामस्वरूप सजा का दावा करती है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी कर्म का परिणाम तात्त्विक और तर्कसंगत रूप से निर्धारित होना चाहिए। यह आयत केवल एक सामान्य दावा करती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन में कर्म और उनके परिणाम को स्पष्ट तर्क और प्रमाण के साथ समझाना आवश्यक होता है। इस आयत में ऐसा कोई तर्क नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना तर्क और प्रमाण के कर्मों के परिणामस्वरूप सजा का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमाण	ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता का दावा बिना प्रमाण के है।

7	**अनुमान**	**पुनर्जीवित करने का दावा बिना वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण के है।**
8	**प्रमाण**	**ख़ुदा की आयतों से मुँह मोड़ने का दावा बिना प्रमाण के है।**
9	**हेटु**	**ख़ुदा के बारे में झगड़ने पर सजा का दावा बिना तर्क के किया गया है।**
10	**व्याप्ति**	**कर्मों के परिणामस्वरूप सजा का दावा बिना तर्क और प्रमाण के है।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में तर्क और प्रमाण का अभाव है, और वे केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी दावे को प्रमाण, तर्क और अनुभवजन्य आधार के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इन आयतों में दावे तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर और अप्रमाणित हैं।

आयत 11: आयत का अनुवाद:
"और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो एक किनारे पर (खड़े होकर) ख़ुदा की इबादत करता है तो अगर उसको कोई फायदा पहुँच गया तो उसकी वजह से मुतमईन हो गया और अगर कहीं उस कोई मुसीबत छू भी गयी तो (फौरन) मुँह फेर के (कुफ़्र की तरफ़) पलट पड़ा उसने दुनिया और आख़ेरत (दोनों) का घाटा उठाया यही तो सरीही घाटा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुछ लोग केवल ख़ुदा से फायदा चाहते हैं, और जब उन्हें मुसीबत आती है तो वे ख़ुदा से मुँह मोड़ लेते हैं। इस तरह वे दुनिया और आख़ेरत दोनों में घाटा उठाते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत विश्वासियों की दृढ़ता और ख़ुदा के प्रति समर्पण की कमी को दर्शाती है, लेकिन यह मानसिकता व्यक्ति की स्थिति पर आधारित है और इसे एक सामान्य प्रवृत्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हालांकि, न्याय दर्शन के अनुसार, किसी व्यक्ति के विश्वास या असमर्थता को केवल सामान्य रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता। हर व्यक्ति की परिस्थितियाँ और उसके तर्क में भिन्नताएँ होती हैं, और इसका मूल्यांकन करना तात्त्विक दृष्टिकोण से कठिन है।**
- **उदाहरण (Example): यदि कोई व्यक्ति किसी मुसीबत में घिरकर विश्वास खो देता है, तो यह उसकी मानसिक और व्यक्तिगत स्थिति पर निर्भर करता है, न कि केवल उसकी सामान्य प्रवृत्ति पर।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत किसी व्यक्ति के विश्वास को सामान्यीकृत करती है और उसकी असमर्थता को एक सामान्य प्रवृत्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 12: आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा को छोड़कर उन चीज़ों को (हाजत के वक़्त) बुलाता है जो न उसको नुक़सान ही पहुँचा सकते हैं और न कुछ नफ़ा ही पहुँचा सकते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा को छोड़कर लोग उन चीज़ों को पुकारते हैं जो न नुकसान पहुँचाती हैं और न लाभ देती हैं।
- **हेतु (Reason):** यह आयत चेतावनी देती है कि लोग अपने हाजत के लिए गलत चीज़ों को बुलाते हैं जो उन्हें कोई लाभ नहीं देतीं। हालांकि, यह दावा केवल एक सामान्य सूचना है और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी वस्तु या घटना के लाभ या हानि को प्रमाणित किया जाना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):** यदि कोई व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान किसी भूत-प्रेत या काल्पनिक ताकतों से खोजता है, तो इसका प्रमाण होना चाहिए कि वह वाकई कोई लाभ देता है। बिना प्रमाण के ऐसा दावा करना न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना प्रमाण के दावा करती है कि ख़ुदा को छोड़कर अन्य चीज़ें कोई लाभ नहीं देतीं, जो न्याय दर्शन के अनुसार अनुपयुक्त है।

आयत 13: आयत का अनुवाद:
"यही तो पल्ले दर्जे की गुमराही है और उसको अपनी हाजत रवाई के लिए पुकारता है जिस का नुक़सान उसके नफ़े से ज़्यादा क़रीब है बेशक ऐसा मालिक भी बुरा और ऐसा रफीक़ भी बुरा।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Viparyaya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग ख़ुदा को छोड़कर अन्य चीज़ों को पुकारते हैं, उनका नुकसान उनकी भलाई से ज्यादा होता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक व्यक्ति की गलत दिशा को दर्शाती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी विचार या सिद्धांत का सही या गलत होने का मूल्यांकन प्रमाण और तर्क के आधार पर किया जाता है। यहां दावा किया गया है कि अन्य चीज़ों से लाभ नहीं होता, परंतु यह दावा प्रमाण से बिना किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): किसी व्यक्ति का किसी अन्य स्रोत से लाभ लेना एक व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है, लेकिन इसे सामान्य रूप से गलत या गुमराही ठहराना न्याय से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के यह दावा करती है कि अन्य चीज़ों को पुकारने से नुकसान होता है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 14: आयत का अनुवाद:
"बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको (ख़ुदा बेहश्त के) उन (हरे-भरे) बाग़ात में ले जाकर दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होगीं बेशक ख़ुदा जो चाहता है करता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए, उन्हें ख़ुदा बेहश्त में प्रवेश देगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ख़ुदा के न्याय और कृपा को दर्शाती है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी वादे का मूल्यांकन प्रमाण और तर्क से किया जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): यदि कोई व्यक्ति धार्मिक कार्य करता है, तो उसका अंततः कोई पुरस्कार प्राप्त करना एक व्यक्तिगत विश्वास हो सकता है, लेकिन इसे तर्कसंगत प्रमाण के बिना सामान्यीकृत करना उचित नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के दावा करती है कि अच्छे काम करने वालों को ख़ुदा बेहश्त में ले जाएगा, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 15: आयत का अनुवाद:
"जो शख़्स (गुस्से में) ये बदगुमानी करता है कि दुनिया और आख़ेरत में ख़ुदा उसकी हरग़िज मदद न करेगा तो उसे चाहिए कि आसमान तक रस्सी ताने (और अपने गले में फाँसी डाल दे) फिर उसे काट दे (ताकि घुट कर मर जाए) फिर देखिए कि जो चीज़ उसे गुस्से में ला रही थी उसे उसकी तदबीर दूर दफ़ा कर देती है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): अगर कोई व्यक्ति यह मानता है कि ख़ुदा उसकी मदद नहीं करेगा, तो उसे आत्महत्या करने की सलाह दी जाती है, और फिर देखिए कि ख़ुदा उसकी स्थिति सुधार देता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत आत्महत्या करने की सलाह देती है, जो न केवल तात्त्विक दृष्टिकोण से गलत है, बल्कि यह मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में भी हानिकारक है। न्याय दर्शन में इस प्रकार के किसी भी विचार को स्वीकार करने का आधार नहीं हो सकता है, क्योंकि यह किसी तरह के प्रमाण या तर्क पर आधारित नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): आत्महत्या किसी भी स्थिति का समाधान नहीं हो सकता है, और इसे सही ठहराना तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक गलत और हानिकारक विचार प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	**प्रमेय**	**किसी व्यक्ति के विश्वास को सामान्यीकृत करना तात्त्विक दृष्टिकोण से कठिन है।**
12	**अनुमान**	**बिना प्रमाण के दावा करना कि अन्य चीज़ें कोई लाभ नहीं देतीं।**
13	**विपरीत**	**बिना प्रमाण के दावा करना कि अन्य चीज़ों से नुकसान होता है।**
14	**व्याप्ति**	**बिना प्रमाण के दावा करना कि अच्छे काम करने वाले बेहश्त में जाएंगे।**

15	**प्रमाण**	**आत्महत्या करने की सलाह देना तात्त्विक और मानसिक दृष्टिकोण से गलत है।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है। इनमें किए गए दावे केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में प्रस्तुत विचारों की आलोचना की जाती है क्योंकि वे प्रमाण और तर्क के अभाव में किए गए हैं।

आयत 16: आयत का अनुवाद:
"और हमने इस कुरआन को यूँ ही वाज़ेए व रौशन निशानियाँ (बनाकर) नाज़िल किया और बेशक ख़ुदा जिसकी चाहता है हिदायत करता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा अपनी इच्छानुसार हिदायत देता है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत ख़ुदा की स्वतंत्र इच्छा और उसकी हिदायत देने की प्रक्रिया को दर्शाती है। हालांकि, इसका कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी दावा को वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण की आवश्यकता होती है, जो इस आयत में नहीं दिया गया।
- **उदाहरण (Example):** यह दावा कि ख़ुदा किसी को हिदायत देता है, सिर्फ एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना प्रमाण के ख़ुदा की हिदायत देने की प्रक्रिया को स्वीकार करती है, जो न्याय दर्शन के अनुसार अनुपयुक्त है।

आयत 17: आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया (मुसलमान) और यहूदी और लामज़हब लोग और नुसैरा और मजूसी (आतिशपरस्त) और मुशरेकीन (कुफ़्फ़ार) यक़ीनन ख़ुदा उन लोगों के दरमियान क़यामत के दिन (ठीक ठीक) फ़ैसला कर देगा इसमें शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ को देख रहा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): क़यामत के दिन ख़ुदा विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच सही फैसला करेगा।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में ख़ुदा के न्याय का दावा किया गया है, लेकिन इसे किसी तात्त्विक या प्रमाणिक आधार पर साबित नहीं किया गया। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी फैसले को प्रमाण और तर्क के आधार पर समझा जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): धार्मिक भिन्नताओं के बावजूद, यह कहना कि ख़ुदा क़यामत के दिन सही फैसला करेगा, केवल विश्वास पर आधारित है, और इसके कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा के निर्णय का दावा करती है, लेकिन इसे प्रमाण के बिना प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**

आयत 18: आयत का अनुवाद:
"क्या तुमने इसको भी नहीं देखा कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं और आफताब और माहताब और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चारपाए (ग़रज़ कुल मख़लूक़ात) और आदमियों में से बहुत से लोग सब ख़ुदा ही को सजदा करते हैं और बहुत से ऐसे भी हैं जिन पर नाफ़रमानी की वजह से अज़ाब का (का आना) लाज़िम हो चुका है और जिसको ख़ुदा ज़लील करे फिर उसका कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं कुछ शक नहीं कि ख़ुदा जो चाहता है करता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सभी मखलूक़ात, चाहे वे आकाश में हों या पृथ्वी पर, ख़ुदा को सजदा करती हैं, और जिन पर नाफ़रमानी का अज़ाब आता है, उन्हें कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं होता।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ख़ुदा की सार्वभौमिक सत्ता और नियंत्रण को दर्शाती है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है। न्याय दर्शन में, किसी सार्वभौमिक घटना या नियम को प्रमाणित करने के लिए अनुभवजन्य साक्ष्य की आवश्यकता होती है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): यह दावा कि सभी मखलूक़ात सजदा करती हैं, एक धार्मिक विचार है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा की सार्वभौमिक सत्ता और नियंत्रण का दावा करती है, लेकिन इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया गया, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**

आयत 19: आयत का अनुवाद:
"ये दोनों (मोमिन व काफिर) दो फरीक़ हैं आपस में अपने परवरदिगार के बारे में लड़ते हैं ग़रज़ जो लोग काफ़िर हो बैठे उनके लिए तो आग के कपड़े क़तअ किए गए हैं (वह उन्हें पहनाए जाएँगें और) उनके सरों पर खौलता हुआ पानी उँडेला जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): काफ़िरों के लिए क़यामत के दिन आग के कपड़े और खौलता पानी दिया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत काफ़िरों के लिए भविष्यवाणी करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है। न्याय दर्शन में, भविष्यवाणियों या सिद्धांतों को प्रमाण के आधार पर देखा जाता है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): यह दावा कि काफ़िरों को क़यामत में आग और पानी मिलेगा, बिना किसी प्रमाण या अनुभवजन्य आधार के किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए भविष्यवाणी करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 20: आयत का अनुवाद:
"जिस (की गर्मी) से जो कुछ उनके पेट में है (आँतें वग़ैरह) और खालें सब गल जाएँगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Viparyaya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): काफ़िरों को जो खौलता पानी मिलेगा, वह उनके पेट और आँतों को गलाने के लिए होगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत काफ़िरों के लिए अत्यंत दंडात्मक और भयंकर सजा का दावा करती है, जो केवल एक धार्मिक विश्वास है और इसका कोई प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, दंड और इन कथनों को प्रमाण और तर्क से मूल्यांकन किया जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): किसी को सजा देने की बात केवल एक धार्मिक विश्वास के रूप में की जा सकती है, लेकिन इसे तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के अत्यधिक दंड का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	**प्रमाण**	**बिना प्रमाण के ख़ुदा की हिदायत देने की प्रक्रिया को स्वीकार करना।**
17	**प्रमेय**	**ख़ुदा के न्याय का दावा बिना प्रमाण के किया गया।**
18	**व्याप्ति**	**ख़ुदा की सार्वभौमिक सत्ता का दावा प्रमाण से बिना किया गया।**
19	**अनुमान**	**बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए भविष्यवाणी करना।**
20	**विपरीत**	**बिना प्रमाण के अत्यधिक दंड का दावा करना।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे बिना प्रमाण या तात्त्विक आधार के हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना या विचार का मूल्यांकन प्रमाण और तर्क के आधार पर किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयत 21: आयत का अनुवाद:
"और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): काफ़िरों के लिए लोहे के गुर्ज़ (लाठियाँ) होंगी।**
- **हेतु (Reason): यह आयत काफ़िरों के लिए एक अत्यंत दंडात्मक चित्रण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है। न्याय दर्शन में, किसी भी दंड या घटना का मूल्यांकन प्रमाण और तर्क के आधार पर किया जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): किसी को दंड देने के विचार का बिना प्रमाण या तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया जाना, विशेष रूप से काफ़िरों के लिए, केवल एक धार्मिक विश्वास है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए अत्यधिक दंड का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 22: आयत का अनुवाद:
"कि जब सदमें के मारे चाहेंगे कि दोज़ख़ से निकल भागें तो (ग़ुर्ज़ मार के) फिर उसके अन्दर ढकेल दिए जाएँगे और (उनसे कहा जाएगा कि) जलाने वाले अज़ाब के मज़े चखो।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): काफ़िरों को दोज़ख़ में जलाने वाले अज़ाब का सामना करना होगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए अत्यधिक दंड का दावा करती है, जो केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है। न्याय दर्शन में, किसी भी दंड या घटना के तात्त्विक प्रमाण की आवश्यकता होती है।**
- **उदाहरण (Example): यह दावा कि काफ़िरों को जलाने का दंड मिलेगा, तात्त्विक दृष्टिकोण से कोई प्रमाण नहीं देता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए अत्यधिक दंड का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 23: आयत का अनुवाद:
"जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्छे काम भी किए उनको ख़ुदा बेहश्त के ऐसे हरे-भरे बाग़ों में दाख़िल फरमाएगा जिनके नीचे नहरे जारी होगीं उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती (के हार) से सँवारा जाएगा और उनका लिबास वहाँ रेशमी होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईमान लाने वाले और अच्छे काम करने वाले लोगों को स्वर्ग में हरे-भरे बागों में भेजा जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत स्वर्ग की एक भव्य और सुखमय स्थिति का वर्णन करती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी भविष्यवाणी या चित्रण को प्रमाण के आधार पर देखा जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): यह दावा कि अच्छे काम करने वालों को स्वर्ग में सज़ा दी जाएगी, केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के स्वर्ग की एक आदर्श छवि प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 24: आयत का अनुवाद:
"और (ये इस वजह से कि दुनिया में) उन्हें अच्छी बात (कलमा ए तौहीद) की हिदायत की गई और उन्हें सज़ावार हम्द (ख़ुदा) का रास्ता दिखाया गया।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): दुनिया में ईमान लाने वाले लोगों को हिदायत दी जाती है और वे स्वर्ग की प्राप्ति करते हैं।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में स्वर्ग की प्राप्ति का कारण ईमान और अच्छे कार्यों को माना गया है, लेकिन यह भी सिर्फ एक धार्मिक विश्वास है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना को प्रमाण और तर्क से देखा जाता है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): यह दावा कि ईमान और अच्छे काम करने से स्वर्ग मिलता है, धार्मिक विश्वास है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के स्वर्ग प्राप्ति का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 25: आयत का अनुवाद:

"बेशक जो लोग काफ़िर हो बैठे और ख़ुदा की राह से और मस्जिदें मोहतरम (ख़ाना ए काबा) से जिसे हमने सब लोगों के लिए (मईद) बनाया है (और) इसमें शहरी और बैरूनी सबका हक़ बराबर है (लोगों को) रोकते हैं (उनको) और जो शख़्स इसमें शरारत से गुमराही करे उसको हम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखा देंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): काफ़िरों और मस्जिदों से ख़ुदा की राह रोकने वालों को दर्दनाक अज़ाब मिलेगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत काफ़िरों और उनके कार्यों के लिए अत्यधिक दंड का दावा करती है, जो केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है। न्याय दर्शन में, किसी भी दंड या घटना को प्रमाण और तर्क से साबित किया जाना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): यह दावा कि काफ़िरों को दंड मिलेगा, बिना किसी तात्त्विक या प्रमाणिक आधार के किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए अत्यधिक दंड का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	प्रमेय	बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए अत्यधिक दंड का दावा।
22	अनुमान	बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए जलाने का दंड।
23	प्रमेय	बिना प्रमाण के स्वर्ग की आदर्श छवि प्रस्तुत करना।
24	व्याप्ति	बिना प्रमाण के स्वर्ग प्राप्ति के कारण का दावा।
25	प्रमेय	बिना प्रमाण के काफ़िरों के लिए दंड का दावा।

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे बिना प्रमाण या तात्त्विक आधार के हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी घटना या विचार का मूल्यांकन प्रमाण और तर्क के आधार पर किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयत 26: आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब हमने इबराहीम के ज़रिये से इबराहीम के वास्ते ख़ानए काबा की जगह ज़ाहिर कर दी (और उनसे कहा कि) मेरा किसी चीज़ को शरीक न बनाना और मेरे घर को तवाफ़ और क़याम और रूकू सुजूद करने वालों के वास्ते साफ सुथरा रखना।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इब्राहीम को हज़रत का स्थान दिखाया गया और उसे साफ सुथरा रखने का आदेश दिया गया।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में धार्मिक आदेश और स्थान की पवित्रता पर जोर दिया गया है, लेकिन यह बात केवल धार्मिक विश्वासों और परंपराओं पर आधारित है। न्याय दर्शन में, किसी स्थान या कार्य को पवित्रता के आधार पर मान्यता देने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है।**
- **उदाहरण (Example): पवित्र स्थानों की परिभाषा धार्मिक दृष्टिकोण से की जाती है, जैसे मक्का या मदीना, लेकिन इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है कि इन स्थानों को विशेष रूप से पवित्र माना जाए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वासों के आधार पर पवित्र स्थानों को मान्यता देती है, जो न्याय दर्शन में प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 27: आयत का अनुवाद:
"और लोगों को हज की ख़बर कर दो कि लोग तुम्हारे पास (ज़ूक दर ज़ूक) ज़्यादा और हर तरह की दुबली (सवारियों पर जो राह दूर दराज़ तय करके आयी होगी चढ़-चढ़ के) आ पहुँचेगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** लोग हज के लिए आएंगे और दूर-दूर से यात्रा करेंगे।
- **हेतु (Reason):** यह आयत धार्मिक कृत्यों के बारे में जानकारी देती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है। न्याय दर्शन में, किसी विशेष घटना का मूल्यांकन प्रमाण और तर्क से किया जाना चाहिए, जैसे हज यात्रा का विशेष महत्व।
- **उदाहरण (Example):** धार्मिक कृत्यों के लिए यात्रा करना, जैसे हज, एक विश्वास पर आधारित कृत्य है और इसका वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है।

आयत 28: आयत का अनुवाद:
"ताकि अपने (दुनिया व आख़ेरत के) फायदो पर फायज़ हों और ख़ुदा ने जो जानवर चारपाए उन्हें अता फ़रमाए उनपर (ज़िबाह के वक़्त) चन्द मोअययन दिनों में ख़ुदा का नाम लें तो तुम लोग कुरबानी के गोश्त ख़ुद भी खाओ और भूखे मोहताज को भी खिलाओ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** हज और बलि के जानवरों पर ख़ुदा का नाम लेना और उनके गोश्त को खुद खाना और दूसरों को खिलाना।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में धार्मिक कृत्य का निर्देश दिया गया है, जो केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी कृत्य को तात्त्विक और प्रमाणिक रूप से स्वीकारने के लिए इसे प्रमाण और तर्क से सिद्ध करना आवश्यक है।
- **उदाहरण (Example):** इस प्रकार के धार्मिक कृत्य, जैसे बलि देना और दूसरों को खिलाना, तात्त्विक दृष्टिकोण से कोई ठोस आधार नहीं रखते।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित कृत्य प्रस्तुत करती है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित या गलत साबित नहीं हो सकती।

आयत 29: आयत का अनुवाद:
"फिर लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी (बदन की) कशाफ्त दूर करें और अपनी नज़रें पूरी करें और क़दीम (इबादत) ख़ाना ए काबा का तवाफ़ करें यही हुक्म है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): हज के दौरान इबादत और तवाफ़ के कृत्य किए जाएं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक कृत्य का आदेश देती है, जो केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी कृत्य को प्रमाण और तर्क से सिद्ध करना आवश्यक होता है।**
- **उदाहरण (Example): हज के दौरान तवाफ़ करना, एक धार्मिक कृत्य है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है कि इससे किसी तरह का शारीरिक या मानसिक लाभ होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक कृत्य का आदेश देती है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण या तर्क प्रदान नहीं करती।**

आयत 30: आयत का अनुवाद:
"और इसके अलावा जो शख़्स ख़ुदा की हुरमत वाली चीज़ों की ताज़ीम करेगा तो ये उसके पवरदिगार के यहाँ उसके हक़ में बेहतर है और उन जानवरों के अलावा जो तुमसे बयान किए जाँएगे कुल चारपाए तुम्हारे वास्ते हलाल किए गए तो तुम नापाक बुतों से बचे रहो और लग़ो बातें गाने वग़ैरह से बचे रहो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा की हुरमत वाली चीजों की ताज़ीम करना और नापाक बुतों से बचना।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक अनुशासन और हुक्म पर आधारित है, जो किसी विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन में, किसी भी कृत्य को प्रमाण और तर्क से सिद्ध किया जाना चाहिए, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): नापाक बुतों से बचना एक धार्मिक आस्थापन्न निर्देश है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार नहीं है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक अनुशासन और विश्वासों पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	**प्रमेय**	**धार्मिक स्थानों की पवित्रता का दावा बिना प्रमाण के।**
27	**व्याप्ति**	**हज यात्रा का आदेश केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
28	**प्रमेय**	**हज और बलि देने का धार्मिक कृत्य बिना प्रमाण के।**
29	**व्याप्ति**	**धार्मिक कृत्य का आदेश बिना तात्त्विक प्रमाण के।**
30	**प्रमेय**	**नापाक बुतों से बचने का आदेश बिना तात्त्विक आधार के।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में जो धार्मिक कृत्य और निर्देश दिए गए हैं, वे सभी धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन कृत्यों को तात्त्विक और प्रमाणिक आधारों से देखा जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयत 31:
आयत का अनुवाद:
"निरे खुरे अल्लाह के होकर (रहो) उसका किसी को शरीक न बनाओ और जिस शख़्स ने (किसी को) ख़ुदा का शरीक बनाया तो गोया कि वह आसमान से गिर पड़ा फिर उसको (या तो दरम्यिान ही से) कोई (मुरदा ख़्ववार) चिड़ीया उचक ले गई या उसे हवा के झोंके ने बहुत दूर जा फेंका।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा का शरीक बनाना गंभीर अपराध है, जो एक व्यक्ति को आसमान से गिरने या अन्य विनाशकारी घटनाओं का कारण बनाता है।**

- **हेतु (Reason): इस आयत में यह बताया गया है कि शरीक बनाने से मनुष्य को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं, लेकिन यह बात एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी विशेष घटना को तात्त्विक या प्रमाणिक दृष्टिकोण से सिद्ध करना महत्वपूर्ण है, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): किसी व्यक्ति का आकाश से गिरना और चिड़ीया द्वारा उचका लिया जाना एक धार्मिक रूपक है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से दोषपूर्ण कृत्य के परिणामों को बताती है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण या अनुभवजन्य आधार नहीं है।**

आयत 32:
आयत का अनुवाद:
"ये (याद रखो) और जिस शख़्स ने ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम की तो कुछ शक नहीं कि ये भी दिलों की परहेज़गारी से हासिल होती है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम परहेज़गारी से प्राप्त होती है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत बताती है कि धार्मिक अनुशासन और परहेज़गारी से ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम की जाती है। यह एक धार्मिक विश्वास पर आधारित सिद्धांत है, जो तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): परहेज़गारी और धार्मिक अनुशासन का पालन करने से व्यक्ति को आत्मिक शांति मिल सकती है, लेकिन इसका वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वास और आस्थाओं पर आधारित है, जिसे तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

आयत 33:
आयत का अनुवाद:

"और इन चार पायों में एक मईन मुद्दत तक तुम्हार लिये बहुत से फायदें हैं फिर उनके ज़िबाह होने की जगह क़दीम (इबादत) ख़ाना ए काबा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): चारपाइयों का ज़िबाह क़दीम ख़ाना ए काबा में किया जाएगा और इसमें फायदें हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक कार्यों का निर्देश देती है, जिसमें चारपाइयों का ज़िबाह किया जाता है। यह आदेश धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): बलि देना और धार्मिक कृत्यों के लिए जानवरों का ज़िबाह करना एक धार्मिक अनुशासन है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार या प्रमाण नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक अनुशासन और विश्वासों पर आधारित है, जिसका तात्त्विक मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।**

आयत 34:
आयत का अनुवाद:
"और हमने तो हर उम्मत के वास्ते कुरबानी का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है ताकि जो मवेशी चारपाए ख़ुदा ने उन्हें अता किए हैं उन पर (ज़िबाह के वक़्त) ख़ुदा का नाम ले ग़रज़ तुम लोगों का माबूद (वही) यकता ख़ुदा है तो उसी के फरमाबरदार बन जाओ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): हर उम्मत के लिए कुरबानी का तरीका निर्धारित किया गया है और इसे ख़ुदा का नाम लेकर किया जाना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक आदेश देती है कि कुरबानी का तरीका सभी उम्मतों के लिए निर्धारित है और इसे ख़ुदा के नाम पर किया जाना चाहिए। यह आदेश धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

- **उदाहरण (Example):** कुरबानी का धार्मिक कृत्य अन्य धर्मों में भी किया जाता है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका तात्त्विक मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

आयत 35:

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल हमारे) गिड़गिड़ाने वाले बन्दों को (बेहश्त की) ख़ुशख़बरी दे दो ये वो हैं कि जब (उनके सामने) ख़ुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल सहम जाते हैं और जब उनपर कोई मुसीबत आ पड़े तो सब्र करते हैं और नमाज़ पाबन्दी से अदा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** जो लोग ख़ुदा की राह पर चलते हैं, उनका दिल ख़ुदा का नाम सुनकर सहम जाता है और वे अपनी समस्याओं पर सब्र करते हैं।
- **हेतु (Reason):** यह आयत धार्मिक आस्थाओं और परहेज़गारी पर आधारित है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन में किसी भी कृत्य को प्रमाण और तर्क से सिद्ध करना आवश्यक है।
- **उदाहरण (Example):** धार्मिक आस्थाओं का पालन करने से मनुष्य को आत्मिक शांति मिलती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं हो सकती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	प्रमेय	शरीक बनाने के परिणामों को धार्मिक विश्वास के आधार पर बताया गया है,

		लेकिन इसका तात्त्विक आधार नहीं है।
32	प्रमेय	ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, जिसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
33	व्याप्ति	जानवरों के ज़िबाह और धार्मिक कृत्य का आदेश बिना प्रमाण के।
34	प्रमेय	कुरबानी का तरीका धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका तात्त्विक आधार नहीं है।
35	प्रमेय	धार्मिक अनुशासन और आस्थाओं का पालन बिना तात्त्विक प्रमाण के।

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में जो धार्मिक कृत्य और निर्देश दिए गए हैं, वे सभी धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन कृत्यों को तात्त्विक और प्रमाणिक आधारों से देखा जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयत 36:
आयत का अनुवाद:
"और कुरबानी (मोटे गदबदे) ऊँट भी हमने तुम्हारे वास्ते ख़ुदा की निशानियों में से क़रार दिया है इसमें तुम्हारी बहुत सी भलाईयाँ हैं फिर उनका तांते का तांता बाँध कर हज करो और उस वक़्त उन पर ख़ुदा का नाम लो फिर जब उनके दस्त व बाज़ू कटकर गिर पड़े तो उन्हीं से तुम ख़ुद भी खाओ और क़नाअत पेशा फ़क़ीरों और माँगने वाले मोहताजों (दोनों) को भी खिलाओ। हमने यूँ इन जानवरों को तुम्हारा ताबेए कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुरबानी के लिए ऊँटों का प्रयोग ख़ुदा की निशानियों का हिस्सा है, जिसमें भलाई और शुक्रगुज़ारी का तत्व है।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में यह बताया गया है कि कुर्बानी का उद्देश्य है ऊँटों का उपयोग ख़ुदा की महिमा और शुक्रगुज़ारी के लिए। लेकिन, न्याय दर्शन के अनुसार, किसी कृत्य का उद्देश्य अगर केवल धार्मिक रूप से परिभाषित हो, तो यह तात्त्विक या प्रमाणिक रूप से साबित नहीं किया जा सकता।**

- **उदाहरण (Example): ख़ुदा के नाम पर जानवरों का ज़िबाह करना धार्मिक कार्य है, लेकिन इसका वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से ठीक है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

आयत 37:

आयत का अनुवाद:

"ख़ुदा तक न तो हरगिज़ उनके गोश्त ही पहुँचेगे और न ख़ून मगर (हाँ) उस तक तुम्हारी परहेज़गारी अलबत्ता पहुँचेगी। ख़ुदा ने जानवरों को (इसलिए) यूँ तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है ताकि जिस तरह ख़ुदा ने तुम्हें बनाया है उसी तरह उसकी बड़ाई करो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा तक केवल परहेज़गारी पहुँचती है, न कि जानवरों का गोश्त या खून।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक आस्था पर आधारित है कि ख़ुदा तक केवल इंसान की परहेज़गारी पहुँचती है, जबकि खून और गोश्त का कोई महत्व नहीं है। यह एक आदर्श वाक्य है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से इसे सिद्ध करना मुश्किल है।**
- **उदाहरण (Example): धार्मिक आस्थाएँ अक्सर निष्कलंक होती हैं, लेकिन यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं की जा सकती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित करना असंभव है।**

आयत 38:

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) नेकी करने वालों को (हमेशा की) ख़ुशख़बरी दे दो। इसमें शक नहीं कि ख़ुदा ईमानवालों से कुफ़्फ़ार को दूर दफा करता रहता है। ख़ुदा किसी बद दयानत नाशुक्रे को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा ईमानवालों को कुफ़्फ़ार से दूर करता है और नाशुक्रे को दोस्त नहीं रखता।**
- **हेतु (Reason): यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा ईमानवालों की रक्षा करता है और नाशुक्रों को दंडित करता है। यह धार्मिक विश्वास है, लेकिन तात्त्विक रूप से यह प्रमाणित नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण (Example): धार्मिक पाठों में यह आम है कि ख़ुदा ईमान वालों को शरण देता है, लेकिन इसके तात्त्विक प्रमाण की कमी है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका तात्त्विक आधार नहीं है।**

आयत 39:

आयत का अनुवाद:

"जिन (मुसलमानों) से (कुफ़्फ़ार) लड़ते थे चूँकि वह (बहुत) सताए गए उस वजह से उन्हें भी (जिहाद) की इजाज़त दे दी गई और ख़ुदा तो उन लोगों की मदद पर यक़ीनन क़ादिर (व तवाना) है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): जिन मुसलमानों को अत्याचार सहना पड़ा, उन्हें जिहाद की इजाज़त दी गई है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दिखाती है कि ख़ुदा ने अत्याचार का सामना करने वालों को जिहाद का अधिकार दिया है। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन तात्त्विक या अनुभवजन्य आधार से इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): जिहाद के अधिकार का धार्मिक दृष्टिकोण विभिन्न समयों और संदर्भों में विभिन्न रूपों में समझा जाता है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक सिद्धांत है, जिसे तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 40:

आयत का अनुवाद:

"ये वह (मज़लूम हैं जो बेचारे) सिर्फ इतनी बात कहने पर कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है (नाहक़) अपने-अपने घरों से निकाल दिए गये और अगर ख़ुदा लोगों को एक दूसरे से दूर दफ़ा न करता रहता तो गिरजे और यहूदियों के इबादत ख़ाने और मजूस के इबादतख़ाने और मस्जिद जिनमें कसरत से ख़ुदा का नाम लिया जाता है कब के कब ढहा दिए गए होते और जो शख़्स ख़ुदा की मदद करेगा ख़ुदा भी अलबत्ता उसकी मदद ज़रूर करेगा बेशक ख़ुदा ज़रूर ज़बरदस्त ग़ालिब है।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ख़ुदा अपनी मदद से धर्म के स्थानों की रक्षा करता है और जो शख़्स उसकी मदद करेगा, वह उसे शक्ति प्रदान करेगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक रूप से यह बताती है कि ख़ुदा अपने स्थानों की रक्षा करता है और जो उसकी मदद करता है, वह उसे सफलता देगा। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): धार्मिक स्थानों की रक्षा या संघर्ष का संदर्भ दुनिया भर में विभिन्न समयों में मिलता है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक विचार पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	प्रमेय	कुर्बानी का उद्देश्य धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
37	प्रमेय	ख़ुदा तक केवल परहेज़गारी पहुँचती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।

38	**व्याप्ति**	**ईमानवालों की रक्षा और नाशुक्रों के दंड का विचार धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**
39	**प्रमेय**	**जिहाद की इजाज़त देने का सिद्धांत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसे तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
40	**व्याप्ति**	**ख़ुदा की मदद से धर्म के स्थानों की रक्षा की बात एक धार्मिक विश्वास है, जिसका तात्त्विक आधार नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में जो धार्मिक कृत्य और आदेश दिए गए हैं, वे धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से इन कृत्यों का कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं पाया जाता। ये आयतें धार्मिक आस्थाओं को प्रोत्साहित करती हैं, लेकिन उनका तात्त्विक मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

आयत 41:

आयत का अनुवाद: "ये वह लोग हैं कि अगर हम इन्हें रूए ज़मीन पर क़ाबू दे दे तो भी यह लोग पाबन्दी से नमाजे अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे-अच्छे काम का हुक्म करेंगे और बुरी बातों से (लोगों को) रोकेंगे और (यूँ तो) सब कामों का अन्जाम ख़ुदा ही के एख़्तेयार में है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत उन लोगों का वर्णन करती है जो यदि जमीन पर क़ाबू पाते हैं तो वे धर्मिक कृत्यों जैसे नमाज, ज़कात, अच्छे काम और बुरी बातों से रोकने का कार्य करेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत किसी आदर्श समाज की कल्पना करती है, लेकिन इसका तात्त्विक मूल्यांकन सवाल खड़ा करता है। क्या यह व्यवहार सब परिस्थितियों में तार्किक रूप से सही है? विशेषकर अगर किसी को अपनी इच्छा या परिस्थितियों के अनुसार अनिवार्य रूप से धर्मिक कृत्य करने पर मजबूर किया जाए।**
- **उदाहरण (Example): नमाज और ज़कात जैसे धार्मिक कृत्य यदि बाहरी दबाव से किए जाएं, तो क्या यह सच्चे श्रद्धा से किए गए हैं?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक आदर्शों को प्रस्तुत करती है, लेकिन किसी समाज में जबरन धार्मिक अनुशासन लागू करना तात्त्विक रूप से सही नहीं कहा जा सकता।**

आयत 42:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) अगर ये (कुफ़्फ़ार) तुमको झुठलाते हैं तो कोई ताज्जुब की बात नहीं, उनसे पहले नूह की क़ौम और (क़ौमे आद और समूद) भी झुठला चुके हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि यदि कुफ़्फ़ार पैग़म्बर को झुठलाते हैं, तो यह कोई नई बात नहीं है, क्योंकि पहले भी अन्य क़ौमें ऐसा कर चुकी हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत इतिहास में घटित घटनाओं का उल्लेख करती है ताकि यह स्थापित किया जा सके कि यह कोई अनोखी स्थिति नहीं है। लेकिन इस दृष्टिकोण में तात्त्विक भ्रम हो सकता है, क्योंकि अगर कोई झूठा है, तो यह नहीं होना चाहिए कि बस यह पहले भी हुआ है, बल्कि यह तय किया जाना चाहिए कि क्या वह वास्तविक रूप से गलत है या नहीं।**
- **उदाहरण (Example): इतिहास में कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ समाज के कुछ हिस्सों ने सत्य को नकारा, फिर भी यह सत्य ने अपने प्रभाव को बढ़ाया।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ऐतिहासिक संदर्भ में सही हो सकती है, लेकिन तात्त्विक रूप से यह स्वीकार करना कि एक झूठ को पहले भी स्वीकार किया गया है, केवल तथ्य के आधार पर सही नहीं हो सकता।**

आयत 43:

आयत का अनुवाद: "और इबराहीम की क़ौम और लूत की क़ौम।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत इबराहीम और लूत की क़ौम का उल्लेख करती है जिन्होंने सत्य को नकारा था।**

- **हेतु (Reason): यह आयत संक्षेप में दो क़ौमों का उल्लेख करती है, जिनके बारे में यह बताया गया है कि उन्होंने सत्य को नकारा। यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि इन क़ौमों के नकारे गए सत्य का क्या आधार था और क्या ये सत्य तात्त्विक रूप से सही थे या नहीं?**
- **उदाहरण (Example): सत्य का नकारा हमेशा हर समय और स्थान पर सार्वभौम नहीं होता है, क्योंकि प्रत्येक समाज में सत्य के विभिन्न आयाम हो सकते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत उदाहरण देती है, लेकिन यह दिखाती नहीं कि यह सत्य तात्त्विक रूप से सिद्ध है या नहीं, क्योंकि समाजों का परिपेक्ष्य भिन्न होता है।**

आयत 44:

आयत का अनुवाद: "और मदीन के रहने वाले (अपने-अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं और मूसा (भी) झुठलाए जा चुके हैं तो मैंने काफिरों को चन्द ढील दे दी फिर (आख़िर) उन्हें ले डाला तो तुमने देखा मेरा अज़ाब कैसा था।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत उन काफ़िरों के बारे में है जिन्होंने अपने पैग़म्बरों को झुठलाया और परिणामस्वरूप उन पर ख़ुदा का अज़ाब आया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ख़ुदा के न्याय और अज़ाब के बारे में बताती है, लेकिन इसे तात्त्विक रूप से प्रमाणित करना मुश्किल है। क्या यह ठीक है कि किसी को केवल उनके विश्वासों के आधार पर सजा दी जाए?**
- **उदाहरण (Example): यदि आज के समाज में किसी को उसके विश्वासों के आधार पर सजा दी जाए तो यह मानवाधिकार का उल्लंघन होगा।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक न्याय सिद्धांत को दर्शाती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से इसे सत्यापित नहीं किया जा सकता।**

आयत 45:

आयत का अनुवाद: "ग़रज़ कितनी बस्तियाँ हैं कि हम ने उन्हें बरबाद कर दिया और वह सरकश थीं पस वह अपनी छतों पर ढही पड़ी हैं और कितने बेकार (उजड़े कुएँ और कितने) मज़बूत बड़े-बड़े ऊँचे महल (वीरान हो गए)।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि कितनी बस्तियाँ ख़ुदा के आदेश से बरबाद हुईं, जिनमें वे सरकश और अराजक थे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत यह दर्शाती है कि ख़ुदा के आदेश से समाजों का पतन हुआ है, जो कि उनके नास्तिकता और अशांति के कारण था। लेकिन यह तात्त्विक दृष्टिकोण से ठीक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि समाजों का पतन कई कारणों से हो सकता है, जैसे राजनीतिक अस्थिरता, आंतरिक संघर्ष, या अन्य सामाजिक और आर्थिक कारण।**
- **उदाहरण (Example): इतिहास में कई सभ्यताएँ अपने अंत से पहले सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता से गुजर चुकी हैं, जो तात्त्विक रूप से स्पष्ट है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से ठीक हो सकती है, लेकिन समाज के पतन का कारण केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समझना तात्त्विक रूप से अपर्याप्त है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	**प्रमेय**	**धार्मिक अनुशासन को समाज पर लागू करना तात्त्विक दृष्टिकोण से ठीक नहीं है।**
42	**प्रमेय**	**सत्य का नकारा पहले भी हुआ है, लेकिन यह इस तथ्य को सिद्ध नहीं करता कि यह सत्य था।**
43	**व्याप्ति**	**सत्य का नकारा एक संदर्भ के आधार पर हो सकता है, लेकिन यह तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं हो सकता।**

44	**प्रमेय**	**ख़ुदा का अज़ाब एक धार्मिक सिद्धांत है, जिसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**
45	**व्याप्ति**	**समाजों का पतन धार्मिक कारणों से समझना तात्त्विक दृष्टिकोण से अपर्याप्त है।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में वर्णित धार्मिक सिद्धांत और कृत्य तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किए जा सकते। ये आयतें धार्मिक विश्वासों और ख़ुदा के आदेशों पर आधारित हैं, लेकिन उनका वैज्ञानिक, तार्किक, और तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 46:

आयत का अनुवाद: "क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिरे नहीं ताकि उनके लिए ऐसे दिल होते हैं जैसे हक़ बातों को समझते या उनके ऐसे कान होते जिनके ज़रिए से (सच्ची बातों को) सुनते क्योंकि आँखें अंधी नहीं हुआ करती बल्कि दिल जो सीने में है वही अन्धे हो जाया करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह बताती है कि आँखें अंधी नहीं होतीं, बल्कि दिल जो सीने में हैं, वही अंधे हो जाते हैं। इस प्रकार, यह विचारशीलता और आत्मिक समझ की कमी को दर्शाता है।**
- **हेतु (Reason): यह विचारशीलता और समझ से जुड़ी बात है, जिसका संदर्भ तात्त्विक दृष्टिकोण से गहराई में जाना जा सकता है। क्या यह हमेशा सच है कि कोई व्यक्ति केवल अपने दिल की स्थिति के कारण सत्य को नहीं समझता? क्या यह उन लोगों के लिए नहीं हो सकता जिनके पास भिन्न दृष्टिकोण और जीवन की परिस्थितियाँ हों?**
- **उदाहरण (Example): कुछ लोग, जो बुद्धि और तर्क से जुड़े होते हैं, वे किसी एक विश्वास या सिद्धांत को केवल दिल से नहीं, बल्कि तार्किक विश्लेषण के आधार पर समझते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक सामान्यीकरण करती है कि कोई अगर सत्य को नहीं समझता तो यह केवल उसके दिल की स्थिति पर निर्भर है, लेकिन यह तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि हर कोई जो सत्य नहीं समझता, वह दिल से अंधा होता है।**

आयत 47:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) तुम से ये लोग अज़ाब के जल्द आने की तमन्ना रखते हैं और ख़ुदा तो हरगिज़ अपने वायदे के ख़िलाफ नहीं करेगा और बेशक (क़यामत का) एक दिन तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार बरस के बराबर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह बताती है कि एक दिन का समय ख़ुदा के नज़दीक एक हजार साल के बराबर है, और वह कभी अपने वायदों के खिलाफ नहीं करता।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक अवधारणाओं पर आधारित है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से इसे प्रमाणित करना कठिन है। क्या समय का यह भिन्न माप हमारे ज्ञात वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से मेल खाता है? क्या यह सही है कि समय की संकल्पना केवल धार्मिक संदर्भ में ही स्वीकार की जाए?**
- **उदाहरण (Example): वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार समय की माप मानव समझ और पृथ्वी पर आधारित है, जबकि धार्मिक दृष्टिकोण में इसे अलौकिक रूप से देखा जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण को व्यक्त करती है, लेकिन इसे तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध करना कठिन है।**

आयत 48:

आयत का अनुवाद: "और कितनी बस्तियाँ हैं कि मैंने उन्हें (चन्द) मोहलत दी हालाँकि वह सरकश थी फिर (आख़िर) मैंने उन्हें ले डाला और (सबको) मेरी तरफ लौटना है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा ने कई बस्तियों को मोहलत दी, हालांकि वे सरकश थीं, और अंततः उनका विनाश कर दिया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत किसी विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन क्या यह सिद्ध किया जा सकता है कि हर समाज या बस्ती का पतन केवल धार्मिक कारणों से हुआ था? क्या यह तात्त्विक रूप से सत्य है कि सभी समाजों का पतन एक दिव्य आदेश के कारण हुआ था?**

- **उदाहरण (Example): समाजों का पतन कई सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारणों से हो सकता है, न कि केवल धार्मिक कारणों से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से संभव हो सकती है, लेकिन तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसे सिद्ध करना कठिन है।**

आयत 49:

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम कह दो कि लोगों में तो सिर्फ तुमको खुल्लम-खुल्ला (अज़ाब से) डराने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत पैग़म्बर से कहती है कि वे लोगों को खुले तौर पर अज़ाब से डराएं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से समझी जा सकती है, लेकिन क्या यह उचित है कि किसी को डर के आधार पर सत्य स्वीकारने के लिए मजबूर किया जाए? क्या इस तरह का डर वास्तव में व्यक्ति की मानसिकता या तर्क को प्रभावित नहीं करता?**
- **उदाहरण (Example): क्या डर से प्रेरित व्यक्ति सच्चे विश्वास से धर्म को अपनाता है या केवल भय से?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह सवाल उठता है कि क्या डर से सत्य को अपनाना सही तरीका है।**

आयत 50:

आयत का अनुवाद: "पस जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए (आख़िरत में) उनके लिए बक्शिश है और बेहिश्त की बहुत उम्दा रोज़ी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए, उनके लिए ख़ुदा के पास जन्नत और अच्छे इनाम हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत धार्मिक पुरस्कारों पर आधारित है, लेकिन यह तात्त्विक दृष्टिकोण से जांची जा सकती है कि क्या यह एक ही दृष्टिकोण को सभी के लिए स्वीकार्य बना सकती है। क्या किसी व्यक्ति के अच्छे कार्यों का केवल धर्म के आधार पर मूल्यांकन करना उचित है, या यह सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी परखा जाना चाहिए?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत नैतिक सिद्धांतों और सामाजिक योगदान से मेल खाता है या केवल धार्मिक कार्यों से?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से इसे समाज के व्यापक मूल्यों और नैतिकता के साथ तुलनात्मक रूप से देखा जाना चाहिए।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	**प्रमेय**	**सत्य का समझना केवल दिल पर निर्भर नहीं होता, यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सीमित हो सकता है।**
47	**प्रमेय**	**एक दिन का समय एक हजार साल के बराबर होना तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
48	**व्याप्ति**	**समाजों का पतन धार्मिक कारणों से ही हुआ, यह तात्त्विक रूप से गलत हो सकता है।**
49	**प्रमेय**	**डर के आधार पर सत्य को अपनाना तात्त्विक दृष्टिकोण से सही नहीं हो सकता।**
50	**प्रमेय**	**केवल धार्मिक कार्यों का मूल्यांकन करना नैतिकता और समाज के व्यापक मूल्यों से मेल नहीं खाता।**

समग्र निष्कर्ष: इन आयतों में धार्मिक दृष्टिकोण से व्यक्त विचारों का निरूपण किया गया है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से उनका मूल्यांकन चुनौतीपूर्ण है। समाज और व्यक्ति के दृष्टिकोण से यह विचार अधिक तार्किक और व्यावहारिक रूप से परखा जा सकता है।

आयत 51:

आयत का अनुवाद: "और जिन लोगों ने हमारी आयतों (के झुठलाने में हमारे) आजिज़ करने के वास्ते कोशिश की यही लोग तो जहन्नुमी हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह बताती है कि जो लोग अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं, वे जहन्नुमी हैं।
- **हेतु (Reason):** यह एक सामान्यीकरण है, जो उन लोगों पर लागू होता है जो धार्मिक विचारों को नकारते हैं। क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि केवल किसी धार्मिक मान्यता को नकारने वाले को सीधे रूप से दंडित किया जाए? क्या यह उन लोगों की मानसिकता, दृष्टिकोण और उनके तर्कों का सम्मान करता है जो विश्वास नहीं करते?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह उचित है कि किसी के विश्वास का आधार केवल उसके विश्वास के खिलाफ जाना हो, या यह हमें यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि उसके विश्वास न स्वीकारने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विवादास्पद हो सकती है, क्योंकि यह केवल विश्वास को नकारने के आधार पर किसी के दंड का निर्धारण करती है।

आयत 52:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल और नबी भेजा तो ये ज़रूर हुआ कि जिस वक़्त उसने (तबलीग़े एहकाम की) आरज़ू की तो शैतान ने उसकी आरज़ू में (लोगों को बहका कर) क़लल डाल दिया फिर जो वस वसा शैतान डालता है ख़ुदा उसे मिटा देता है फिर अपने एहकाम को मज़बूत करता है और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफकार दाना है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि जब कोई रसूल और नबी अपने संदेश को फैलाता है तो शैतान उस संदेश में विघ्न डालता है, लेकिन ख़ुदा उसे मिटा देता है और अपने आदेशों को स्थिर करता है।**
- **हेतु (Reason): यह विचार शैतान के प्रभाव को एक धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। क्या यह सत्य है कि केवल शैतान ही सभी विकारों का कारण है? क्या इस तरह की सोच हमें दूसरों के विचारों, तर्कों और विश्वासों का सम्मान करने के बजाय केवल नकारात्मक दृष्टिकोण पर ही केंद्रित कर देती है?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह विश्वास कि सभी विकार शैतान के प्रभाव से होते हैं, तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्थिर किया जा सकता है? क्या मानसिक और सामाजिक समस्याओं का हल केवल शैतान के प्रभाव को मानकर निकाला जा सकता है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण पेश करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह सवाल उठाती है कि क्या सभी समस्याओं का कारण केवल एक दिव्य शक्ति और शैतान के प्रभाव को मानना उचित है।**

आयत 53:

आयत का अनुवाद: "और शैतान जो (वसवसा) डालता (भी) है तो इसलिए ताकि ख़ुदा उसे उन लोगों के आज़माईश (का ज़रिया) क़रार दे जिनके दिलों में (कुफ़्र का) मर्ज़ है और जिनके दिल सख़्त हैं और बेशक (ये) ज़ालिम मुशरेकीन पल्ले दरजे की मुख़ालेफ़त में पड़े हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि शैतान के वसवसे का उद्देश्य उन लोगों का परीक्षण करना है, जिनके दिलों में कुफ़्र का रोग है और जो ज़ालिम मुशरेकीन हैं।**

- **हेतु (Reason): यह आयत उन लोगों को दोषी ठहराती है जिन्होंने ईश्वर के साथ किसी को साझी किया (शिर्क), लेकिन क्या यह सही है कि केवल बाहरी विश्वासों के आधार पर किसी के दिल की स्थिति का निर्धारण किया जाए?**
- **उदाहरण (Example): क्या केवल शिर्क करने से किसी का दिल कठोर हो जाता है? क्या यह सत्य नहीं कि कई बार व्यक्ति बाहरी कारणों से विक्षिप्त हो जाता है, न कि केवल उसके विश्वास के कारण?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह केवल विश्वासों को दोषी ठहराती है, बजाय इसके कि व्यक्ति के समग्र दृष्टिकोण और सामाजिक संदर्भ को समझने की कोशिश की जाए।**

आयत 54:

आयत का अनुवाद: "और (इसलिए भी) ताकि जिन लोगों को (कुतूबे समादी का) इल्म अता हुआ है वह जान लें कि ये (वही) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से ठीक ठीक (नाज़िल) हुई है फिर (ये ख़्याल करके) इस पर वह लोग ईमान लाए फिर उनके दिल ख़ुदा के सामने आजिज़ी करें और इसमें तो शक ही नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया उनको ख़ुदा सीधी राह तक पहुँचा देता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह बताती है कि जिन्हें ज्ञान प्राप्त है, वे समझें कि यह संदेश (कुरआन) ईश्वर की तरफ से सच्चा है और उनके दिल ईश्वर के सामने आज़िज़ हो जाएं।**
- **हेतु (Reason): यह विचार यह मानता है कि केवल धार्मिक ज्ञान और विश्वास से ही किसी का मार्गदर्शन किया जा सकता है, लेकिन क्या यह तात्त्विक रूप से सही है कि केवल ज्ञान के आधार पर किसी को सही मार्ग पर लाया जा सकता है?**
- **उदाहरण (Example): क्या ज्ञान और विश्वास से प्रेरित सभी लोग उसी मार्ग पर चलते हैं? क्या यह सही है कि केवल ज्ञान से कोई व्यक्ति सच्चाई की ओर बढ़ेगा, या उसके अनुभव और मानसिक स्थिति भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है?**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण पेश करती है, लेकिन इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से पूरी तरह से प्रमाणित करना मुश्किल है, क्योंकि यह केवल ज्ञान और विश्वास को ही मार्गदर्शन का मूल कारण मानती है।**

आयत 55:

आयत का अनुवाद: "और जो लोग काफ़िर हो बैठे वह तो कुराआन की तरफ से हमेशा शक ही में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि क़यामत यकायक उनके सर पर आ मौजूद हो या (यूँ कहो कि) उनपर एक सख़्त मनहूस दिन का अज़ाब नाज़िल हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जो लोग काफिर हैं, वे कुरआन के संदर्भ में हमेशा शक में पड़े रहेंगे और अंततः उन्हें क़यामत के दिन या किसी मनहूस दिन के अज़ाब का सामना करना पड़ेगा।**
- **हेतु (Reason): यह आयत काफिरों को विश्वास न करने के कारण दोषी ठहराती है, लेकिन क्या यह सही है कि केवल विश्वास की कमी को किसी के अंतिम परिणाम के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए? क्या व्यक्ति की आस्थाएँ और विचार केवल धार्मिक संदर्भ में ही जांची जानी चाहिए?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह उचित है कि एक व्यक्ति के विश्वास न करने को केवल एक दंड का कारण माना जाए, बजाय इसके कि उसकी सोच, तर्क और व्यक्तिगत यात्रा को समझा जाए?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से सवाल किया जा सकता है, क्योंकि यह किसी के विश्वास के आधार पर उसकी अंतिम स्थिति का निर्धारण करती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

51	प्रमेय	विश्वास न करने वाले को सीधे दंडित करना तात्त्विक दृष्टिकोण से विवादास्पद है।
52	व्याप्ति	शैतान के प्रभाव को सभी विकारों का कारण मानना तात्त्विक दृष्टिकोण से सीमित है।
53	प्रमेय	विश्वासों और दिल की स्थिति को केवल एक निश्चित दृष्टिकोण से देखना तात्त्विक रूप से उचित नहीं है।
54	प्रमेय	केवल ज्ञान और विश्वास से व्यक्ति को मार्गदर्शन देना तात्त्विक रूप से अपूर्ण हो सकता है।
55	प्रमेय	विश्वास न करने को दोषी ठहराना और दंडित करना तात्त्विक दृष्टिकोण से सही नहीं है।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत विचारों को तात्त्विक दृष्टिकोण से चुनौती दी जा सकती है। इन आयतों में जो सामान्यीकरण किए गए हैं, वे किसी के आस्थाओं और विश्वासों के आधार पर उनके भविष्य के परिणामों का निर्धारण करते हैं, जो तात्त्विक रूप से आलोचनात्मक दृष्टिकोण से समस्याग्रस्त हो सकते हैं।

आयत 56:

आयत का अनुवाद: "उस दिन की हुकूमत तो ख़ास ख़ुदा ही की होगी वह लोगों (के बाहमी एख़्तेलाफ) का फ़ैसला कर देगा तो जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे काम किए हैं वह नेअमतों के (भरे) हुए बाग़ात (बेहश्त) में रहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह बताती है कि क़यामत के दिन केवल अल्लाह का हुक्म चलेगा, और ईमानवालों और अच्छे काम करने वालों को स्वर्ग (बेहिश्त) मिलेगा।**
- **हेतु (Reason): यह विचार एक अदृश्य न्याय का संकेत करता है, जिसमें केवल अच्छे कामों और विश्वास के आधार पर किसी का अंतिम निर्णय होगा। क्या यह तात्त्विक रूप से उचित है कि केवल**

एक दिव्य न्याय के आधार पर सबका अंत निश्चित किया जाए? क्या यह किसी अन्य दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सही है?

- **उदाहरण (Example):** क्या हर व्यक्ति के अच्छे या बुरे कामों का मूल्यांकन केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही किया जाना चाहिए? क्या अन्य कारक जैसे समाज, शिक्षा और परिस्थितियाँ भी किसी के कर्मों को प्रभावित करती हैं?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक दिव्य न्याय के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार केवल विश्वास और कर्मों के आधार पर किसी के अंतिम परिणाम का निर्धारण करना विवादास्पद हो सकता है।

आयत 57:

आयत का अनुवाद: "और जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो यही वह (कम्बख़्त) लोग हैं जिनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि जो लोग काफिर हैं और अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं, उनके लिए अपमानजनक दंड होगा।
- **हेतु (Reason):** यह विचार काफिरों को सीधे रूप से दंड देने का विचार प्रस्तुत करता है। क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित है कि किसी के विश्वास के कारण उसे अपमानित किया जाए? क्या किसी के विश्वास को न मानने के लिए उसे दंडित किया जाना न्यायसंगत है?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह सही है कि केवल किसी के विश्वास न करने को दंड का कारण माना जाए, बजाय इसके कि उसकी मानसिकता और तर्क को समझा जाए?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से विचार करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विवादास्पद हो सकती है, क्योंकि विश्वास के आधार पर किसी को दंडित करना मानवता के साथ न्याय नहीं करता है।

आयत 58:

आयत का अनुवाद: "जिन लोगों ने ख़ुदा की राह में अपने देस छोड़े फिर शहीद किए गए या (आप अपनी मौत से) मर गए ख़ुदा उन्हें (आख़िरत में) ज़रूर उम्दा रोज़ी अता फ़रमाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि जो लोग ख़ुदा की राह में अपने घर छोड़कर शहीद हुए या मृत्यु को प्राप्त हुए, उन्हें ख़ुदा उत्तम रोज़ी देगा।
- **हेतु (Reason):** यह विचार जीवन को केवल धार्मिक संदर्भ में देखने की प्रवृत्ति को प्रस्तुत करता है। क्या यह तात्त्विक रूप से सही है कि किसी के द्वारा धार्मिक उद्देश्य के लिए अपनी जान देने को ही सबसे बड़ा आदर्श माना जाए?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह हमेशा सही है कि एक व्यक्ति को अपने धार्मिक उद्देश्य के लिए मृत्यु को गले लगाना चाहिए? क्या समाज में शांति और सह-अस्तित्व की आवश्यकता को अधिक महत्व नहीं दिया जाना चाहिए?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक कुर्बानियों को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह समाज में शांति और बहुलता की आवश्यकता को नज़रअंदाज़ करती है।

आयत 59:

आयत का अनुवाद: "और बेशक तमाम रोज़ी देने वालों में ख़ुदा ही सबसे बेहतर है वह उन्हें ज़रूर ऐसी जगह (बेहिश्त) पहुँचा देगा जिससे वह निहाल हो जाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि सभी रोज़ी देने वालों में ख़ुदा सबसे श्रेष्ठ है और वह अपने बंदों को स्वर्ग में प्रवेश दिलाएगा।
- **हेतु (Reason):** यह विचार उस धार्मिक विश्वास को प्रकट करता है कि ख़ुदा ही सर्वश्रेष्ठ है और उसका निर्णय सर्वोत्तम होता है। क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित है कि सभी निर्णयों के आधार पर

केवल एक दिव्य न्याय को सर्वोपरि माना जाए? क्या यह विश्वास दूसरों के दृष्टिकोण को नकारता नहीं है?

- **उदाहरण (Example): क्या किसी के व्यक्तिगत या धार्मिक विश्वास को सर्वोत्तम मानना हमेशा सही है? क्या समाज में विविध विश्वासों का सम्मान करना अधिक महत्वपूर्ण नहीं है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार दूसरों के विश्वासों और दृष्टिकोणों का सम्मान करने में विफल हो सकता है।**

आयत 60:

आयत का अनुवाद: "वह उन्हें ज़रूर ऐसी जगह (बेहिश्त) पहुँचा देगा जिससे वह निहाल हो जाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अल्लाह अपने ईमानदार बंदों को स्वर्ग (बेहिश्त) में एक ऐसी जगह ले जाएगा जहाँ वे सुखी और खुशहाल होंगे।**
- **हेतु (Reason): यह विचार उन लोगों को उत्तम इनाम का आश्वासन देता है जो धार्मिक रूप से सही मार्ग पर चलते हैं। क्या यह सही है कि केवल धार्मिक कार्यों और विश्वासों के आधार पर किसी का सुख और शांति सुनिश्चित किया जाए?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह हमेशा सही है कि केवल एक विशेष धार्मिक विश्वास के आधार पर ही किसी को स्वर्ग में स्थान दिया जाए, जबकि अन्य लोग भी अपनी अपनी मान्यताओं और विश्वासों के अनुसार जीवन जीते हैं?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार अन्य विश्वासों को अस्वीकार करता है और केवल एक ही मार्ग को सही मानता है, जो कि सार्वभौमिक दृष्टिकोण से समस्या पैदा कर सकता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**

संख्या		
56	प्रमेय	केवल अच्छे कर्म और विश्वास पर आधारित किसी का अंत सुनिश्चित करना तात्त्विक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
57	प्रमेय	विश्वास न करने वाले को सीधे दंडित करना तात्त्विक दृष्टिकोण से समस्याग्रस्त हो सकता है।
58	व्याप्ति	धार्मिक कुर्बानियों को सबसे बड़ा आदर्श मानना तात्त्विक दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकता है।
59	प्रमेय	एक दिव्य न्याय को सर्वोपरि मानना, दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करने में विफल हो सकता है।
60	प्रमेय	केवल धार्मिक विश्वासों को सर्वोत्तम मानने से दूसरों के दृष्टिकोण को नकारा जा सकता है।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में प्रस्तुत विचार धार्मिक दृष्टिकोण से कुछ महत्वपूर्ण नैतिक और दार्शनिक विचार प्रस्तुत करते हैं, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह आलोचना योग्य हो सकते हैं। इन आयतों में विश्वास और कर्म के आधार पर किसी के अंतिम परिणाम का निर्धारण किया जाता है, जो सार्वभौमिक दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकता है।

आयत 61:

आयत का अनुवाद: "बेशक ख़ुदा बड़ा माफ करने वाला बख़्शने वाला है ये (मदद) इस वजह से दी जाएगी कि ख़ुदा (बड़ा क़ादिर है वही) तो रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और इसमें भी शक नहीं कि ख़ुदा सब कुछ जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत ख़ुदा के असीम सामर्थ्य और ज्ञान का उल्लेख करती है, जिसमें रात और दिन को एक-दूसरे में बदलने की क्षमता और उसके पूर्ण ज्ञान की पुष्टि की जाती है।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में ख़ुदा के सर्वशक्तिमान होने का विचार प्रस्तुत किया गया है, लेकिन क्या यह विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से स्वीकार्य है कि किसी अदृश्य शक्ति के पास संपूर्ण ब्रह्मांड के नियंत्रण की शक्ति हो? क्या यह अवलोकन में हम पाते हैं?
- **उदाहरण (Example):** क्या आधुनिक विज्ञान यह नहीं बताता कि पृथ्वी के घूर्णन के कारण रात और दिन का परिवर्तन होता है? क्या इसे केवल किसी दिव्य शक्ति का काम मानना तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित है?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत ख़ुदा की दिव्यता और शक्ति का वर्णन करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह सवाल किया जा सकता है कि क्या रात और दिन के परिवर्तन को सिर्फ धार्मिक दृष्टिकोण से ही समझा जा सकता है, या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इसे समझा जा सकता है?

आयत 62:

आयत का अनुवाद: "इस वजह से (भी) कि यक़ीनन ख़ुदा ही बरहक़ है और उसके सिवा जिनको लोग (वक़्ते मुसीबत) पुकारा करते हैं (सबके सब) बातिल हैं और (ये भी) यक़ीनी (है कि) ख़ुदा ही (सबसे) बुलन्द मर्तबा बुज़ुर्ग है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि ख़ुदा ही सत्य है, और सभी अन्य देवताओं या शक्तियों का अस्तित्व नष्ट है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी सर्वोच्चता को रेखांकित करती है, लेकिन क्या यह तात्त्विक रूप से सही है कि केवल एक भगवान को सत्य मानकर सभी अन्य विश्वासों को झूठा कहा जाए?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह तर्क करना सही है कि केवल एक धर्म या विश्वास को सत्य मानना और अन्य विश्वासों को अस्वीकार करना, सार्वभौमिकता और सहिष्णुता के सिद्धांतों के खिलाफ नहीं जाता है?

- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक दिव्य सत्य के विचार को प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह किसी एक विश्वास को सत्य और अन्य विश्वासों को झूठा मानने की प्रक्रिया विवादास्पद हो सकती है।**

आयत 63:

आयत का अनुवाद: "अरे क्या तूने इतना भी नहीं देखा कि ख़ुदा ही आसमान से पानी बरसाता है तो ज़मीन सर सब्ज़ (व शादाब) हो जाती है बेशक ख़ुदा (बन्दों के हाल पर) बड़ा मेहरबान वाक़िफ़कार है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि ख़ुदा ही पानी बरसाकर धरती को जीवन देता है और यह उसका विशेष कृपा है।**
- **हेतु (Reason): यह विचार धार्मिक दृष्टिकोण से जलवायु और प्राकृतिक चक्र को ख़ुदा की कृपा के रूप में प्रस्तुत करता है। क्या यह तात्त्विक रूप से उचित है कि प्रकृति के संचालन को सिर्फ किसी दिव्य शक्ति के काम के रूप में ही देखा जाए?**
- **उदाहरण (Example): क्या विज्ञान के दृष्टिकोण से हम यह नहीं जानते कि जलवाष्प के कारण बादल बनते हैं और फिर वर्षा होती है? क्या इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखना तात्त्विक रूप से स्वीकार्य है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा की कृपा को मान्यता देती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से इसे केवल एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में भी देखा जा सकता है, न कि केवल दिव्य कृपा के रूप में।**

आयत 64:

आयत का अनुवाद: "जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है और इसमें तो शक ही नहीं कि ख़ुदा (सबसे) बेपरवाह (और) सज़ावार हम्द है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत ख़ुदा के सर्वोच्च अधिकार और सम्पूर्ण ब्रह्मांड पर उसकी प्रभुत्वता का वर्णन करती है।**
- **हेतु (Reason): यह विचार ख़ुदा को सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी मानता है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से संभव है कि केवल एक ईश्वर सम्पूर्ण सृष्टि पर शासन करता है? क्या अन्य शास्त्रों में भी ऐसे ही विचार प्रस्तुत किए गए हैं?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह विचार उचित है कि केवल एक ईश्वर सृष्टि का स्वामी है, जबकि विभिन्न धार्मिक परंपराओं में ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के विभिन्न दृष्टिकोण हैं?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा के सर्वशक्तिमान होने का दावा करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह सार्वभौमिक और सभी दृष्टिकोणों को सम्मान देने वाले सिद्धांत के खिलाफ जा सकता है।**

आयत 65:

आयत का अनुवाद: "क्या तूने उस पर भी नज़र न डाली कि जो कुछ रूए ज़मीन में है सबको ख़ुदा ही ने तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है और कश्ती को (भी) जो उसके हुक्म से दरिया में चलती है और वही तो आसमान को रोके हुए है कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर (जब) उसका हुक्म होगा (तो गिर पड़ेगा) इसमें शक नहीं कि ख़ुदा लोगों पर बड़ा मेहरबान व रहमवाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत ख़ुदा के आदेश से सृष्टि के संचालन और नियंत्रण को प्रस्तुत करती है, जिसमें पृथ्वी, आकाश और जल पर ख़ुदा की सत्ता का वर्णन किया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत ख़ुदा को सम्पूर्ण ब्रह्मांड के संचालन का जिम्मेदार मानती है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि प्रत्येक प्राकृतिक घटना को एक दिव्य आदेश के रूप में प्रस्तुत किया जाए?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह संभव है कि प्राकृतिक घटनाओं को हमेशा धार्मिक दृष्टिकोण से समझा जाए, जबकि विज्ञान ने इन घटनाओं के लिए व्यावहारिक और प्राकृतिक कारणों को स्पष्ट किया है?**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा की शक्ति को प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह प्राकृतिक घटनाओं को केवल दिव्य शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना विज्ञान के दृष्टिकोण से सही नहीं हो सकता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	**प्रमेय**	**रात और दिन के परिवर्तन को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखना तात्त्विक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।**
62	**प्रमेय**	**एक ही ईश्वर को सत्य मानना और अन्य विश्वासों को झूठा मानना, सार्वभौमिक दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकता है।**
63	**प्रमेय**	**प्राकृतिक घटनाओं को केवल दिव्य कृपा के रूप में देखना विज्ञान के दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।**
64	**प्रमेय**	**एक ईश्वर की सर्वोच्चता को मानना और सृष्टि के संचालन के संदर्भ में अन्य दृष्टिकोणों को नकारना तात्त्विक दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकता है।**
65	**प्रमेय**	**प्राकृतिक घटनाओं को केवल दिव्य शक्ति के रूप में देखना विज्ञान के दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं हो सकता।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में ख़ुदा की शक्ति और प्रभुत्व को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से इन विचारों की आलोचना की जा सकती है। प्राकृतिक घटनाओं और ब्रह्मांड के संचालन को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखना तात्त्विक रूप से उचित नहीं हो सकता है, क्योंकि विज्ञान ने इन घटनाओं को समझने के लिए प्राकृतिक कारणों की पहचान की है।

आयत 66:

आयत का अनुवाद: "और वही तो क़ादिर मुत्तलिक़ है जिसने तुमको (पहली बार माँ के पेट में) जिलाया, फिर वही तुमको मार डालेगा, फिर वही तुमको दोबारा जिन्दगी देगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत ख़ुदा के असीम सामर्थ्य और जीवन-मृत्यु के चक्र में उसकी भूमिका का उल्लेख करती है। इसमें ख़ुदा को जीवन और मृत्यु का नियंत्रणकर्ता बताया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह विचार धार्मिक दृष्टिकोण से ख़ुदा के नियंत्रण और शक्ति को प्रकट करता है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से उपयुक्त है कि जीवन और मृत्यु को सिर्फ एक दिव्य शक्ति के नियंत्रण में माना जाए, जबकि आधुनिक विज्ञान ने जीवन की शुरुआत और अंत को जैविक प्रक्रियाओं से जोड़ा है?**
- **उदाहरण (Example): क्या जीवन और मृत्यु की अवधारणा केवल एक धार्मिक और दिव्य दृष्टिकोण से ही समझी जा सकती है, जबकि जीवविज्ञान और चिकित्सा में इसके जैविक कारणों को स्पष्ट किया गया है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा के जीवन और मृत्यु पर नियंत्रण का दावा करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसे जैविक प्रक्रियाओं से समझता है।**

आयत 67:

आयत का अनुवाद: "हमने हर उम्मत के वास्ते एक तरीका मुक़र्रर कर दिया कि वह इस पर चलते हैं, फिर तो उन्हें इस दीन (इस्लाम) में तुम से झगड़ा न करना चाहिए और तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की तरफ़ बुलाए जाओ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत इस्लाम को सत्य मार्ग के रूप में प्रस्तुत करती है और अन्य विश्वासों को खारिज करने का आग्रह करती है।**

- **हेतु (Reason): यह आयत उन लोगों को यह समझाने का प्रयास करती है कि हर समुदाय के लिए एक तरीका निर्धारित है और इस्लाम ही सही मार्ग है। हालांकि, क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि सिर्फ एक विश्वास को सत्य मानकर अन्य विश्वासों को गलत ठहराया जाए?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह तर्क करना उचित है कि एक धर्म को ही पूरी दुनिया में स्वीकार्य माना जाए, जबकि अन्य धर्मों और विश्वासों में भी सार्वभौमिक सत्य की खोज की जा सकती है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत इस्लाम को सत्य मानती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार किसी एक विश्वास को सार्वभौमिक सत्य मानने की चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर सकता है।**

आयत 68:

आयत का अनुवाद: "बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो और अगर (इस पर भी) लोग तुमसे झगड़ा करें तो तुम कह दो कि जो कुछ तुम कर रहे हो ख़ुदा उससे ख़ूब वाक़िफ़ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह घोषणा करती है कि इस्लाम ही सत्य और सही मार्ग है, और इसके पालन करने वालों को किसी विवाद या आलोचना का सामना नहीं करना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह आयत अन्य लोगों की आलोचना को ख़ुदा के ज्ञान के संदर्भ में स्पष्ट करती है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से उपयुक्त है कि किसी अन्य दृष्टिकोण को आलोचना करने से बचना चाहिए, जबकि हर व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपनी सोच रखने का अधिकार है?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह उचित है कि केवल एक धर्म को सत्य मानकर अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों को नकार दिया जाए? क्या यह लोकतांत्रिक सिद्धांतों और धार्मिक सहिष्णुता के खिलाफ नहीं जाता?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत इस्लाम को सत्य मार्ग मानती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह किसी एक विश्वास के पक्ष में सब कुछ मानना और अन्य विश्वासों की आलोचना करना सार्वभौमिक दृष्टिकोण से कठिन हो सकता है।**

आयत 69:

आयत का अनुवाद: "जिन बातों में तुम बाहम झगड़ा करते थे क़यामत के दिन ख़ुदा तुम लोगों के दरम्यिान (ठीक) फ़ैसला कर देगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत क़यामत के दिन किसी भी प्रकार के विवाद और मतभेद का ख़ुदा द्वारा अंतिम समाधान करने का दावा करती है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत यह संदेश देती है कि सब विवादों का समाधान ख़ुदा द्वारा क़यामत के दिन होगा, लेकिन क्या यह तात्त्विक रूप से सही है कि सभी विवादों को एक दिव्य अदालत में हल करने का विचार सही है? क्या इसमें न्याय का कोई तार्किक आधार है या यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह विचार उचित है कि किसी भी विवाद को सिर्फ क़यामत के दिन ही हल किया जाए, जबकि आज के समाज में लोग अपनी समस्याओं का हल पहले से ढूंढने का प्रयास करते हैं?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत क़यामत के दिन समाधान का दावा करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार विवादों के समाधान के लिए एक व्यावहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अनुपयुक्त हो सकता है।**

आयत 70:

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है ख़ुदा यक़ीनन जानता है, इसमें तो शक नहीं कि ये सब (बातें) किताब (लौहे महफ़ूज़) में (लिखी हुई मौजूद) हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत ख़ुदा के सम्पूर्ण ज्ञान का उल्लेख करती है और इसे "लौहे महफ़ूज़" में संकलित बताया गया है।**

- **हेतु (Reason): यह विचार ख़ुदा के सम्पूर्ण ज्ञान और नियंत्रण को प्रकट करता है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि सभी घटनाएँ और घटनाक्रम पहले से एक किताब में लिखी हुई हैं, और क्या इसमें मानव स्वतंत्र इच्छा की संभावना नहीं होती?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह मानना उचित है कि हर घटना और हर निर्णय पहले से लिखा हुआ है, जबकि मनुष्य को अपनी इच्छाओं के अनुसार निर्णय लेने का अधिकार है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा के सम्पूर्ण ज्ञान को प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह मानव स्वतंत्रता और इच्छाओं को नकारता प्रतीत होता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	प्रमेय	जीवन और मृत्यु को केवल एक दिव्य शक्ति से जोड़ना तात्त्विक दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
67	हेटु	एक विश्वास को सत्य मानना और अन्य विश्वासों को खारिज करना तात्त्विक दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकता है।
68	प्रमेय	किसी भी आलोचना को ख़ुदा के ज्ञान से जोड़ना मानव स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांतों से टकराता हो सकता है।
69	प्रमेय	क़यामत के दिन विवादों के समाधान का विचार व्यावहारिक दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
70	प्रमेय	ख़ुदा के सम्पूर्ण ज्ञान को पूर्व निर्धारित घटनाओं के रूप में प्रस्तुत करना मानव स्वतंत्रता और इच्छाओं के सिद्धांतों से टकराता है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता और पूरी सृष्टि पर उसकी प्रभुत्वता का दावा किया गया है, लेकिन

तात्त्विक दृष्टिकोण से ये विचार मानव स्वतंत्रता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, और विभिन्न धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

आयत 71:

आयत का अनुवाद: "बेशक ये (सब कुछ) ख़ुदा पर आसान है और ये लोग ख़ुदा को छोड़कर उन लोगों की इबादत करते हैं जिनके लिए न तो ख़ुदा ही ने कोई सनद नाज़िल की है और न उस (के हक़ होने) का ख़ुद उन्हें इल्म है और क़यामत में तो ज़ालिमों का कोई मददगार भी नहीं होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत में यह कहा गया है कि लोग अपने विश्वासों में उन चीजों को पूजते हैं जिन्हें ख़ुदा ने अनुमोदित नहीं किया, और ऐसे विश्वासों को क़यामत में कोई सहारा नहीं मिलेगा।
- **हेतु (Reason):** यह आयत यह समझाती है कि धार्मिक आस्थाएँ ख़ुदा द्वारा प्रमाणित होनी चाहिए। लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि किसी विशेष धार्मिक मार्ग को ख़ुदा के द्वारा अनुमोदित न मानना गलत है? क्या यह मानवता के विविध विश्वासों की वास्तविकता और सहिष्णुता से मेल खाता है?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह विचार उचित है कि केवल एक धर्म को ख़ुदा द्वारा मान्यता प्राप्त माना जाए और बाकी को नकारा जाए? क्या यह एक लोकतांत्रिक और मानवतावादी समाज के सिद्धांतों के खिलाफ नहीं है?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत यह दावा करती है कि ख़ुदा के द्वारा प्रमाणित विश्वासों के अलावा किसी और विश्वास को स्वीकार नहीं किया जा सकता, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह मानवता के विभिन्न विश्वासों और धार्मिक विविधता को चुनौती दे सकती है।

आयत 72:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) जब हमारी वाज़ेए व रौशन आयतें उनके सामने पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो तुम (उन) काफ़िरों के चेहरों पर नाख़ुशी के (आसार) देखते हो (यहाँ तक कि) क़रीब होता है कि जो लोग उनको हमारी आयातें पढ़कर सुनाते हैं उन पर ये लोग हमला कर बैठे (ऐ रसूल) तुम कह दो (कि) तो क्या मैं तुम्हें इससे भी कहीं बदतर चीज़ बता दूँ (अच्छा) तो सुन लो वह जहन्नुम है जिसमें झोंकने का वायदा ख़ुदा ने काफ़िरों से किया है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह बताया गया है कि जब कुफ़्फ़ार (काफ़िर) अल्लाह की आयतें सुनते हैं, तो उनके चेहरों पर नाखुशी के चिह्न होते हैं और वे उन पर हमला भी कर सकते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत यह दिखाती है कि काफ़िरों की प्रतिक्रिया को ख़ुदा की सच्चाई से नकारात्मक रूप से जोड़ा जाता है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित है कि किसी विशेष धार्मिक मान्यता को अन्यथा मानते हुए नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करना जायज़ है?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह सही है कि किसी व्यक्ति को सिर्फ इसलिए नकारा जाए क्योंकि वह किसी विशेष धार्मिक विश्वास को स्वीकार नहीं करता? क्या इस प्रकार के विचार से बहुलता और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा मिलता है?**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का तात्त्विक मूल्यांकन करते हुए यह कहा जा सकता है कि धार्मिक विश्वासों में विवाद और हिंसा की संभावना को बढ़ावा देना मानवीय और सामाजिक दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं है।**

आयत 73:

आयत का अनुवाद: "और वह क्या बुरा ठिकाना है, लोगों एक मस्ल बयान की जाती है तो उसे कान लगा के सुनो कि ख़ुदा को छोड़कर जिन लोगों को तुम पुकारते हो वह लोग अगरचे सब के सब इस काम के लिए इकट्ठे भी हो जाएँ तो भी एक मक्खी तक पैदा नहीं कर सकते और कहीं मक्खी कुछ उनसे छीन ले जाए तो उससे उसको छुड़ा नहीं सकते (अजब लुत्फ है) कि माँगने वाला (आबिद) और जिससे माँग लिया (माबूद) दोनों कमज़ोर हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह बताया गया है कि अगर अल्लाह के अलावा अन्य देवताओं को पूजा जाता है, तो वे उनके सामने एक मक्खी तक पैदा नहीं कर सकते।**

- **हेतु (Reason):** यह आयत यह दिखाती है कि अल्लाह की शक्ति सभी अन्य चीजों से कहीं अधिक है। लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि किसी अन्य देवता की शक्ति को इस हद तक नकारा जाए?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह विचार सही है कि अन्य धार्मिक विश्वासों के प्रतीकों और देवताओं को इतनी कठोरता से नकारा जाए? क्या यह एक सहिष्णु और समानता की भावना को बढ़ावा नहीं देता?
- **निगमन (Conclusion):** तात्त्विक दृष्टिकोण से यह आयत अन्य विश्वासों की शक्ति को पूरी तरह नकारने की प्रवृत्ति को दर्शाती है, जो समाज में धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

आयत 74:

आयत का अनुवाद: "ख़ुदा की जैसे क़द्र करनी चाहिए उन लोगों ने न की, इसमें शक नहीं कि ख़ुदा तो बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह कहती है कि लोग ख़ुदा की सच्ची क़द्र नहीं करते, जबकि ख़ुदा की शक्ति और प्रभुत्व असीम है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत ख़ुदा की सर्वशक्तिमानता को रेखांकित करती है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से उचित है कि केवल ख़ुदा को असीम और अपूर्व शक्ति वाला माना जाए, जबकि वास्तविकता में दुनिया में विभिन्न शक्तियाँ और प्रौद्योगिकियाँ मौजूद हैं?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह दृष्टिकोण कि ख़ुदा की क़द्र न करने वाले लोग गलत हैं, एक एकल धार्मिक दृष्टिकोण को स्वीकार करने की मानसिकता को बढ़ावा नहीं देता?
- **निगमन (Conclusion):** ख़ुदा के सर्वोच्चता के विचार को पूरी दुनिया में एक धार्मिक दृष्टिकोण से ही प्रस्तुत किया जाता है, जो तात्त्विक रूप से अन्य विचारों और दृष्टिकोणों से भिन्न हो सकता है।

आयत 75:

आयत का अनुवाद: "ख़ुदा फरिश्तों में से बाज़ को अपने एहकाम पहुँचाने के लिए मुन्तख़िब कर लेता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा अपने आदेशों को पहुँचाने के लिए फरिश्तों को चुनता है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत फरिश्तों की भूमिका को महत्वपूर्ण बनाती है, लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि ख़ुदा अपने आदेशों को केवल फरिश्तों के माध्यम से ही भेजता है, जबकि आज की दुनिया में इंसान को अपनी सोच और विवेक से निर्णय लेने की स्वतंत्रता है?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह विचार उचित है कि केवल एक अलौकिक प्राणी को ही आदेश और संदेश भेजने का अधिकार है, जबकि मानव समाज में विभिन्न शक्तियों और स्वतंत्रताओं का स्थान है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ख़ुदा के आदेशों के लिए फरिश्तों को माध्यम बनाने का दावा करती है, लेकिन यह तात्त्विक दृष्टिकोण से मानवता की स्वतंत्र सोच और विवेक को नकार सकती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	**प्रमेय**	**विभिन्न विश्वासों के संदर्भ में ख़ुदा द्वारा अनुमोदित विश्वासों के अलावा सभी को गलत ठहराना मानवता के विविधता को नकारता है।**
72	**हेटु**	**धार्मिक विवादों को हिंसा और नफरत से जोड़ना सामाजिक और मानसिक दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं है।**
73	**प्रमेय**	**अन्य विश्वासों को इस तरह से नकारना सहिष्णुता और विविधता के सिद्धांतों के खिलाफ जा सकता है।**
74	**प्रमेय**	**ख़ुदा की असीम शक्ति को मानव स्वतंत्रता और विवेक से जोड़ने का विचार तात्त्विक दृष्टिकोण से अनुकूल नहीं है।**
75	**प्रमेय**	**फरिश्तों के माध्यम से आदेश भेजने का विचार मानव विवेक और स्वतंत्रता के**

सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में ख़ुदा की शक्ति और प्रभुत्व की प्रमुखता को दर्शाया गया है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार अन्य विश्वासों और दृष्टिकोणों की विविधता को नकारने के रूप में देखे जा सकते हैं। ऐसे विचार समाज में सहिष्णुता और बहुलता के सिद्धांतों के खिलाफ हो सकते हैं।

आयत 76:

आयत का अनुवाद: "और (इसी तरह) आदमियों में से भी बेशक ख़ुदा (सबकी) सुनता देखता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका है) (ख़ुदा सब कुछ) जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा सभी लोगों की बातें सुनता और देखता है, और जो कुछ उनके पास होता है और जो अतीत में हुआ है, वह सब जानता है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत ख़ुदा की सर्वव्यापकता और उसकी अनंत ज्ञान की पुष्टि करती है। लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि किसी एक शक्ति को सब कुछ जानने और देखनें की क्षमता दी जाए, जबकि आज के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह सवाल उठता है कि इस ब्रह्मांड में सब कुछ जानना और समझना संभव है या नहीं?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह संभव है कि कोई शक्ति सब समय, स्थान और घटनाओं को पूरी तरह से समझे? क्या यह विचार किसी तरह की मूक सहमति या विवेक के अभाव में विश्वास रखने को प्रेरित करता है?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत ख़ुदा के ज्ञान की सार्वभौमिकता को प्रस्तुत करती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार करना महत्वपूर्ण है कि क्या मानवता और प्रकृति के सटीक विवरण को किसी एक शक्ति से जोड़ना तार्किक रूप से संभव है।

आयत 77:

आयत का अनुवाद: "और तमाम उमूर की रूजूअ ख़ुदा ही की तरफ होती है। ऐ ईमानवालों रूकू करो और सजदे करो और अपने परवरदिगार की इबादत करो और नेकी करो ताकि तुम कामयाब हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत में यह कहा गया है कि सभी कार्यों का अंत ख़ुदा की ओर लौटता है, और ईमानवालों को रूकू, सजदा और नेकी करने के लिए प्रेरित किया जाता है, ताकि वे सफल हो सकें।
- **हेतु (Reason):** यह आयत धार्मिक आस्थाओं को विश्वास के कृत्यों के रूप में प्रस्तुत करती है, जिनके माध्यम से सफलता प्राप्त होती है। लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सही है कि सफलता केवल एक धार्मिक पथ पर चलने से प्राप्त होती है? क्या सफलता केवल ईश्वर की इच्छा के मुताबिक होती है, या यह भी व्यक्तिगत प्रयास, नैतिकता, और समाजिक योगदान से निर्धारित होती है?
- **उदाहरण (Example):** क्या यह विचार कि केवल धार्मिक कृत्य से सफलता प्राप्त होती है, मानवता की विभिन्न दृष्टिकोणों और प्रयासों की विविधता को अनदेखा नहीं करता है?
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक कृत्य को सफलता का मार्ग मानते हुए व्यक्ति की जिम्मेदारी और समाजिक योगदान की भूमिका को नकार सकती है, जो तात्त्विक रूप से चिंताजनक हो सकता है।

आयत 78:

आयत का अनुवाद: "ताकि तुम कामयाब हो और जो हक़ जिहाद करने का है ख़ुदा की राह में जिहाद करो उसी ने तुमको बरगुज़ीदा किया और उमूरे दीन में तुम पर किसी तरह की सख़्ती नहीं की तुम्हारे बाप इबराहीम के मजहब को (तुम्हारा मज़हब बना दिया) उसी (ख़ुदा) ने तुम्हारा पहले ही से मुसलमान (फरमाबरदार बन्दे) नाम रखा और कुराआन में भी (तो जिहाद करो) ताकि रसूल तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बने और तुम पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात देते रहो और ख़ुदा ही (के एहकाम) को मज़बूत पकड़ो वही तुम्हारा सरपरस्त है, तो क्या अच्छा सरपरस्त है और क्या अच्छा मददगार है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा ने मुसलमानों को जिहाद के लिए चुना और उनके लिए नमाज़, ज़कात और धार्मिक आस्थाओं का पालन अनिवार्य किया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत जिहाद, नमाज़, और ज़कात को धार्मिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा मानती है। लेकिन क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से ठीक है कि किसी विशेष कृत्य को पूरी मानवता के लिए अनिवार्य मान लिया जाए? क्या यह सार्वभौमिक नैतिकता और मानवाधिकारों के सिद्धांतों के खिलाफ नहीं है?**
- **उदाहरण (Example): क्या यह विचार कि एक विशेष धार्मिक प्रथा सभी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए, अन्य आस्थाओं और विश्वासों के लिए बंद दरवाजे नहीं खोलता? क्या यह विचार एक विशेष धार्मिक मार्ग पर चलने के बजाय अन्य विश्वासों और जीवन पद्धतियों को नकारने का कारण नहीं बनता?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक विशेष धार्मिक पथ को अनिवार्य मानती है, लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार मानवता के विविध विश्वासों और जीवन पद्धतियों को अनदेखा कर सकता है। समाज में सहिष्णुता और विविधता का सिद्धांत इस विचार के खिलाफ जा सकता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
76	**प्रमेय**	**ख़ुदा का सर्वज्ञता का दावा तार्किक दृष्टिकोण से अनदेखा कर सकता है कि सारा ब्रह्मांड एक ही शक्ति के नियंत्रण में हो।**
77	**हेटु**	**धार्मिक आस्थाएँ और कृत्य केवल सफलता के मार्ग के रूप में प्रस्तुत करने से व्यक्तिगत प्रयासों और समाजिक योगदान को नकारा जा सकता है।**
78	**प्रमेय**	**एक विशेष धार्मिक मार्ग को अनिवार्य मानना मानवता की विविधता और विभिन्न विश्वासों के खिलाफ हो सकता है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक विश्वासों और कृत्यों को सफलता और मुक्ति का मुख्य मार्ग मानते हुए एक विशेष

धार्मिक मार्ग पर चलने का आग्रह किया गया है। लेकिन तात्त्विक दृष्टिकोण से यह विचार मानवता की विविधता, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, और अन्य विश्वासों के प्रति सहिष्णुता के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।